#१४. वास्तविकता -२

दिनांक -9/10/2011

सहअस्तित्व में जागृतिक्रम, जागृति और जागृतिपूर्वक अभिव्यक्तियाँ हैं | अभिव्यक्तियाँ जागृत मानव परम्परा में होना समझ में आया है | इस क्रम में मानव समझदार होने की आवश्यकता है ही | यही संतुलन का आधार है | अभी तक मानव जीव परम्परामें जीते हुए जीवों से अच्छा जीने का प्रयत्न कियाहै | उसमें सफल हुआ है | सफल होने का तात्पर्य यही है कि जीवों से अच्छा जीने के क्रम में आहार, विहार, व्यवहार में दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन सम्बन्धी वस्तुओं को प्राप्त किया है | जैसा गाड़ियाँ वाहन के रूप में, भार वाहक के रूप में प्राप्त कर लिया है | इन सब उपक्रमों को विकास माना हैजबकि जागृतिपूर्वक जीने पर ही विकास का मतलब सार्थक होता है |

मानव सदा सदा कल्पनाशीलता का प्रयोग किया है | कर्म करते समय स्वतंत्रता को, फल भोगते समय परतंत्रता को व्यक्त किया है;जबकि जीव परम्परा में वंशानुषंगी विधि से जीना जीवों में देखा गया है | जीवों में यही देखने को मिलता है कि जीव कर्म करते समय में परतंत्र तथा फल भोगते समय भी परतंत्र रहते हैं | परतंत्रता के इस स्वरुप में मानव हस्तक्षेप होना पाया जाता है | हस्तक्षेप का फलन प्रधान रूप में पदार्थावस्था, प्राणावस्था का परिणामशीलता ही है | इस विधि से परतंत्रता का आधार समझ में आता है | परतंत्रता का आधार जीवेतर प्रकृति रुपी पदार्थ अवस्था, प्राण अवस्था ही है | इन्हीं के साथ जो कुछ भी कार्यवाही मानव ने किया है, साथ में जीवों के साथ भी किया है उसके फल परिणाम के आधार पर परतंत्रता है | हर दिन यंत्र संसार में पराधीनता रहता ही है | स्वयंके विचार में कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता में परिवर्तन भी परतंत्रता का कारण है | इस प्रकार मनुष्य परतंत्र होने का कारण एवं आधार समझ में आता है |

मानव कर्म करते समय में स्वतंत्र हो, फल भोगते समय में भी स्वतंत्र हो- यही प्रस्ताव है | यह जीव चेतना विधि से सम्भवनहीं है | मानव चेतना विधि से सम्भवहोता है अर्थात कर्म करते समय में स्वतंत्र तथा फल भोगते समय में भी स्वतंत्र होते हैं | इसका मूल कारण में यही देखा गया है कि कर्म करते समय भी फल, परिणाम ज्ञान रूप में विदित रहता है तथा उसी अनुरूप फल परिणाम होते हैं | इसी का नाम ज्ञानावस्था का स्वरुप है | यही जागृतिपूर्णता का स्वरुप है | जागृतिक्रम में मानव ही जीव चेतना में जीता है | जीव संसार वंशानुषंगी विधि से अपने त्व सहित व्यवस्था, उपयोगिता व पूरकता को प्रमाणित किये रहता है जबकि मानव ज्ञानावस्था में जीते हुए अपने उपयोगिता, पूरकता को प्रमाणित नहीं कर पाया | अध्ययन विधि से यह भी विदित हुआ कि जंगल, झाड़ी, जीवों का विरोधी मानव ही हैजबकि मानव चेतना विधि से जीने के क्रम में इन पर नियंत्रण पाने की व्यवस्था है |

संतुलन का मतलब यही है कि जो जीव कम या अधिक हो गए हैं उन्हें नियंत्रित करने के अधिकार से है अर्थात मानव परम्पराको छोड़कर अन्य परम्परामें संतुलन को बनाये रखने का अधिकार होता है | इस क्रम में मानव में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्यपूर्वक जीना बना रहता है | यही जागृतमानव का लक्षण है | जागृतमानव ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करता है | इस प्रकार संतुलन एक भाग है | जागृतमानव में स्वयंस्फूर्त विधि से होना पाया जाता है | बाकि

तीनों अवस्थाओं में संतुलन बना रहता है तथा हर जागृतमानव का अधिकार इन पर बना रहता है | मानव ही अनुभवमूलक विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व विधि से जीता है | यह सहअस्तित्व में अनुभव होनेके फलस्वरूप रहता है | अनुभवमूलक विचार विधि से जीने में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होता है | अनुभवमूलक विचार सम्मत विधि से व्यवहार में स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार प्रमाणित होता है | मूलतः अनुभव सहअस्तित्व में ही होना पाया जाता है | इसे भली प्रकार से जाँचा गया है, देखा गया है | अनुभवमूलक विधि से विचार, व्यवहार होना पाया जाता है | अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में मानव जाति एक, मानव धर्म एक होना बोधगम्य होता है | अध्ययन विधि से व्यवस्था में जीना बनता है |

अखण्ड समाज इसकी पूर्व भूमिका है | इसके लिये जागृत मानव परम्पराअपनाना ही बनता है दूसरा कोई रास्ता नहीं है | इस प्रकार जागृतिपूर्ण अभिव्यक्तियाँ अर्थात हर मानव का आचरण सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या ही रहता है | इसके लिये योग्य परम्परा होने के अर्थ में चेतना विकास मूल्य शिक्षा प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत है | इसमें हर व्यक्ति के अध्ययनपूर्वक पारंगत होने की व्यवस्था है | इसके अध्ययन के पक्ष में कुछ लोग लग चुके हैं, अध्ययन कर रहे हैं | इनमें हर व्यक्ति में अध्ययन करने का माद्दा है, यह स्वीकार होता जा रहा है | अनुभव अर्थात पारंगत होने क अर्थ में जागृत मानव परम्परा सार्थक है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत